युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 34 कुल पृष्ठ-8 12 से 18 अप्रैल, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 वै.कृ.-12

वैदिक संस्कृति "वसुधैव कुटुम्बकम्" की पोषक है

– स्वामी आर्यवेश

नशा विहीन समाज का निर्माण करना हमारा आदर्श

2 से 7 अक्टूबर, 2018 तक नशाबन्दी जन–चेतना यात्रा निकाली जायेगी

– ओम प्रकाश आर्य

आर्य समाज ही हमारी सांस्कृतिक सभ्यता और मानवता का रख–रखाव कर सकता है

– कुंवर विजय प्रताप

देश की समस्याओं के समाधान के लिए आर्य समाज से जुड़ें

– अश्विनी शर्मा एडवोकेट

महर्षि दयानन्द धाम, आर्य समाज बाजार हंसली, अमृतसर की ओर से वैदिक सांस्कृतिक विरासत संभाल कार्यक्रम के तहत आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर "आर्य गौरव दिवस" एस.एल. भवन्स स्कूल, शिवाला रोड, अमृतसर में ओम प्रकाश आर्य अध्यक्ष आर्य विद्यासभा, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार की अध्यक्षता में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से अपना आशीर्वचन व सभा को सम्बोधित करने के लिए उपस्थित हुए। मुख्य अतिथि के तौर पर श्री कुंवर विजय प्रताप सिंह आई.जी. पंजाब, श्री अश्विनी शर्मा एडवोकेट प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री वरिन्दर सहदेव, सामाजिक कार्यकर्ता, श्री अरविन्द मेहता उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, सुलक्षण सरीन एडवोकेट नवांशहर, श्रीमती स्वराज ग्रोवर सामाजिक कार्यकर्ता, श्री अनिल कपूर प्रधान डिस्ट्रीब्यूटर एसोसिएशन, श्री तरसेम लाल आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री महेन्द्र पाल मेहता, श्री जवाहर लाल मेहता, श्री जुगल महाराज बी.एस.पी. नेता, श्री तरसेम लाल आर्य मंत्री बरनाला विशेष रूप से उपस्थित हुए। कार्यक्रम का शुभारम्भ ईश प्रार्थनोपासना से महर्षि आर्य महिला परिषद् की बहनों श्रीमती सुलोचना आर्या, श्रीमती सुनीता पसाहन, डॉ. अंजू आर्या, शशि गुप्ता, नम्रता पसाहन, कमलेश रानी, खुशी आर्या, शशि, विजय अरोड़ा ने गायन कर किया। तत्पश्चात् श्रीमती मधुरभाषिणी, नीना कपूर, डॉ. अंजू आर्या, पूजा मेहरा, नीलम सर्राफ ने ज्योति प्रज्ज्वलित कर नारी सशक्तिकरण की आवाज बुलन्द की।

वैदिक गर्ल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल की प्रिंसिपल नवीता भाटिया, जोगिन्दर लाल लखोतरा, रमन भाटिया व श्री देवपाल आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नेतृत्व में श्री आत्मप्रकाश आर्य समाज दाल बाजार, लुधियाना, श्री महेन्द्र पाल जी लुधियाना, श्री रजिन्दर गुप्ता लुधियाना, श्री सूर्य प्रकाश जी जालन्धर, डॉ. शिव दयाल माली जालन्धर, श्री परमजीत जी जालन्धर ने स्वामी आर्यवेश जी को शॉल व बुकें देकर स्वागत किया तथा स्वामी दयानन्द जी के जयकारों से आडिटोरियम को गुंजायमान कर दिया। आये हुए सभी मुख्य अतिथियों का स्वागत श्री विजय सर्राफ प्रधान गोल्ड एण्ड सिलवर एसोसिएशन, सुलोचना आर्या, श्री राजेश आहूजा, आचार्य दयानन्द शास्त्री, श्री नरेन्द्र आर्य, श्री राजकुमार, श्री कर्ण पसाहन, डॉ. नवीन आर्य, श्री अशोक वर्मा आदि ने मुख्य अतिथियों का स्वागत स्मृति चिन्ह व सरोपे देकर किया।

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

ज्योतिषियों के चक्कर अथवा अन्धविश्वास की कड़ियाँ

– पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

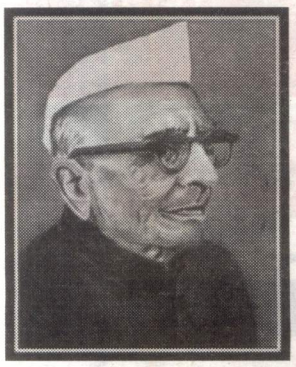

सेवक व स्वामी अन्तर?

एक बार मैंने एक लड़के से पूछा, सेवक और स्वामी में क्या अन्तर है?उसकी समझ में न आया। मैंने कहा, देखो सेवक कुर्सी को सिर पर रखकर चलता है और स्वामी उस पर बैठता है। बुद्धिमान् लोग प्रकृति के दृश्यों का अवलोकन करते और उसका समुचित प्रयोग करके लाभान्वित होते हैं। मूर्ख अज्ञानी उन्हीं दृश्यों को देखकर चकित होते और उनके सामने हाथ जोड़ते हैं। वेद में अग्नि को देवता कहकर पुकारा गया है। अग्नि का जलना प्रकृति का एक विशेष दृश्य है, परन्तु जिन वैज्ञानिकों ने अग्नि के गुणों को समझा है उन्होंने आग से कितने काम लिये?आज मानव अग्नि से न केवल भोजन पकाता है प्रत्युत आग को घड़ा बनाकर उसकी पीठ पर सवार होता है परन्तु जब वेद के आशय को भूलकर भारतवर्ष अविद्या के खड्डे में गिर गया तो लोगों ने अग्नि के सामने हाथ जोड़े। उसमें बलियां (पशुओं की) दीं। उसकी स्तुति के गीत गाये। उससे मिन्नतें मांगी गईं। अग्नि अज्ञानी मनुष्य के लिये उपास्य है परन्तु बुद्धिमान् के लिए साधन। अन्धविश्वासी अग्नि की पूजा करता है। ज्ञानी उसका प्रयोग करता है। अविद्या मनुष्य को दास बनाकर रखती है।

विदेशी राज से स्वतन्त्र परन्तु सितारों के दास :- भारतवर्ष में जहाँ और दूसरी प्रकार की दासता प्रचलित हो गई वहाँ सितारों की भी भयानक दासता है जो आजकल भी दु:खी कर रही है। भारत आज स्वतन्त्र है। किससे?केवल अंग्रेजी राज सें । परन्तु सितारों की दासता का जुआ आज भी उसकी गर्दन पर घाव कर रहा है। और विचित्र बात तो यह है कि भारत के लोग आज भी इस दासता के जुये को सम्मान का निशान समझ रहे हैं।

सितारों के चक्कर में :- एक बार मुझे एक मित्र ने एक विवाह संस्कार करवाने के लिए बुलाया। कन्या के पिता आर्य थे। आर्य सामाजिक रीति से विवाह होना था। मैं प्राय: संस्कार करवाने नहीं जाता परन्तु कलकत्ता के एक मित्र के विशेष आग्रह पर चला गया। विवाह वाराणसी में एक पंजाबी महाशय के यहां होने वाला था। जब में काशी पहुंचा तो विवाह के समय के बारे में पूछा कि संस्कार किस समय होगा?कन्या के पिता ने उत्तर दिया तीन बजे रात्रि का मुहूर्त निकला है। मैंने पूछा, ''आर्य समाज में मुहूर्त का क्या अर्थ?'' वे कहने लगे कि हम तो ज्योतिष के मानने वाले हैं तथा विवाह का यही समय होगा। मैं प्रयाग से गया था। असमंजस में पड़ गया। विवाह में विघ्न डालना नहीं चाहता था। न शोर मचाना मुझे प्रिय था। मैंने कहा, ''मैं तो अमुक मित्र के निमन्त्रण पर आया हूँ। आप किसी पण्डित को आर्यसमाज से बुला लें। संस्कार के समय मुझे जगा लें। मैं सम्मिलित हो जाऊँगा।'' वे समझ गये। और जब संस्कार आधा हो चुका तो एक व्यक्ति मुझे जगाने गया। उस समय लगभग चार बजे थे। उस दिन से मैंने कभी विवाह संस्कार कराने का साहस नहीं किया।

इस अन्धविश्वास ने राज्य तक डुबो डाले :- आर्य समाज में इस प्रकार के उदाहरण थोड़े हैं परन्तु आर्य समाज से बाहर तो ऐसा प्रतीत होता है कि संसार तारों के ही आधीन है। हिन्दुओं का तो कोई भी काम तारों व उनके उपासकों की सहायता के बिना नहीं चलता। जब बच्चा जन्म लेता है ज्योतिषी आता है। नाम रखा जाता है तो ज्योतिषी की सहायता लेनी पड़ती है। ज्योतिषी यदि चाहे तो अच्छे से अच्छे जोड़े को मिलने से रोक दे। ज्योतिषी के यह कारनामे साधारण मनुष्यों के जीवन के लिए ही निर्णायक नहीं है। इन्होंने बड़े-बड़े विशाल राज्यों को विनष्ट कर दिया है। इतिहास बताता है कि भारत को बाबर की दासता के पंजे में जकड़ने वाली यही तारों की दासता (ज्योतिष) ही थी। कहते हैं जब बाबर ने राणा संग्रामसिंह पर चढ़ाई करने का विचार बनाया तो बाबर का दिल कांपने लगा। राणा सांगा की शूरता की सारे भारत में धाक थी। बाबर ने सुन रखा था कि राणा संग्राम सिंह को हराना लोहे के चने चबाना है। बाबर को आक्रमण करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। वह घेरा डाले प्रतीक्षा करता रहा। उधर राणा सांगा की सेना आक्रमणकारियों को रोकने को तैयार थी। राणा सांगा चाहता था कि दुर्ग से बाहर निकल कर अरिदल पर टूट पड़े। राणा के लिए ऐसा करना कठिन नहीं था। बाबर अपरिचित था। जब कई दिन हो गये और राणा सांगा ने कुछ न किया तो बाबर को आश्चर्य हुआ और उसने अपने गुप्तचर बात का पता लगाने को भेजे। उन्होंने बाबर को सूचना दी कि राणा सांगा शुभ मुहूर्त की बाट जोह रहा है। उसके पण्डितों ने उसे सूचित किया था कि ग्रह प्रतिकूल हैं। जब तक ग्रह अनुकूल न हों, शत्रु से टक्कर लेने में विजय न होगी। बाबर ईशोपासक था। उसने सोचा के ग्रहों के दास वीर भी हों तो क्या। वह समझ गया कि यह ज्योतिषियों की शिक्षा का प्रभाव है कि प्रत्येक सैनिक के हृदय पर भय बैठा है। जिस मनुष्य को यह निश्चय हो जाये कि प्रकृति (Nature) उसके विरुद्ध है उसका हृदय आधा रह जाता है। बाबर ने ज्योतिषियों की इस भविष्यवाणी का लाभ उठाया। उसने अपने सैनिकों से कहा कि राणा सांगा के ग्रह अनुकूल नहीं हैं। अत: इसी घड़ी धावा बोल दिया जाये। इसका तो सीधा अर्थ है कि ग्रह मेरे अनुकूल है। बाबर ने शीघ्र धावा बोल दिया। राणा संग्राम के वीरों को ज्योतिषियों ने हतोत्साहित कर रखा था। राणा जी जान से लड़ा परन्तु पराजित हुआ। सूर्यवंश का सूर्य सदा-सदा के लिए अस्त हो गया। मुगल राज की स्थापना हो गई। महाराणा प्रताप आदि को जो कष्ट उठाने पड़े वे इसी ज्योतिष का परिणाम थे। जो वीर तोप तलवार से नहीं डरता वह ग्रहों तारों से डर जाता है। क्योंकि तलवार को तो देख सकते हैं सितारों के प्रभाव लुकछुप कर घात लगाते हैं।

कैसी-कैसी युक्तियां घड़ी जाती हैं :- स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास में इस बात पर बल दिया है कि बच्चों को ज्योतिषियों से बचाना चाहिए। क्योंकि यदि एक बार बच्चें के मन पर ग्रहों का प्रभाव बैठ गया तो वह जवान होने पर और अधिक बल पकड़ेगा। बच्चे ग्रहों से इतना नहीं डरते जितना कि नवयुवक डरते हैं। उनको यही बताया गया है कि जो कुछ भी होता है ग्रहों के प्रभाव से ही होता है। ग्रहों की चाल का सारे संसार पर आधिपत्य है। ग्रहों की दासता की बन्धन कड़ियों को सुदृढ़ करने के लिए कई प्रकार के तर्क सोचे गये हैं। एक बार एक आर्य समाजी मित्र ने मुझे कहा कि ज्योतिष का फल अवश्य होता है। उसके लिये वैज्ञानिक युक्ति है। मैंने कहा, कैसी?उसने कहा ग्रहों की गति में व मनुष्य के भाग्य में कुछ समानान्तरता (Parallelism) है। जैसे-जैसे मनुष्य के भाग्य में होता है उसकी भविष्यवाणी के रूप में कुछ न कुछ संकेत ग्रहों की गति में दिखाई देते हैं। जैसे दो घड़ियों की सुइयाँ पृथक-पृथक चलती हुई भी समानान्तर दूरी पर रहती हैं, और आप एक घड़ी में देखकर समय बता सकते हैं कि दूसरी में भी यही समय होगा। इसी प्रकार चांद, सूर्य, शनिश्चर आदि की चाल से यह जान सकते हैं कि अमुक व्यक्ति का भाग्य किस ओर जा रहा है। यह तर्क इस ढंग से प्रस्तुत किया जाता है कि सामान्य मनुष्य इस पर विश्वास कर लेता है तथा ज्योतिष वालों की बातों पर विश्वास हो जाता है। वास्तव में यह युक्ति भ्रामक है। ग्रह प्रकृति का एक भाग है। इसी प्रकार प्रकृति में बहुत सी ऐसी वस्तुएं हैं यथा नदी, पर्वत, वृक्ष आदि। ये विभिन्न पदार्थ अपने क्षेत्र में घटते बढ़ते रहते हैं। हमारे पास कोई प्रमाण नहीं कि इनकी गति को दो घड़ियों की गति से उपमा दी जाये। इतनी दूर आकाश में जाने की आवश्यकता नहीं है। यदि प्रकृति में इतनी समानान्तरता होती जितनी दो घड़ियों में है तो हम पर्वतों व नदियों की चाल देखकर अपने जीवन की दुर्घटनाओं का पता लगा सकते। यदि हिमालय पर्वत व गंगा नदी हमारे जीवन के समानान्तर नहीं चलते तो शनिश्चर या बृहस्पति तारा कैसे चल सकता है?एक वृक्ष दूसरे वृक्ष के समानान्तर नहीं है। एक नदी दूसरी नदी के समानान्तर नहीं। एक पर्वत दूसरे पर्वत के समानान्तर नहीं और एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के समानान्तर नहीं। ग्रहों की गति का सम्बन्ध सब मनुष्यों के जीवन से एक सा है। जो ग्रह जिस प्रकार से गति कर रहे थे उसका प्रभाव बाबर पर उसी प्रकार था जितना व जैसा राणा सांगा पर। ग्रह न हिन्दू थे न मुसलमान। वे किसी का पक्षपात नहीं कर सकते थे फिर क्या कारण है कि बाबर के जीवन के समानान्तर हो गये और राणा सांगा का उन्होंने साथ न दिया?

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास में इस बात पर बल दिया है कि बच्चों को ज्योतिषियों से बचाना चाहिए। क्योंकि यदि एक बार बच्चें के मन पर ग्रहों का प्रभाव बैठ गया तो वह जवान होने पर और अधिक बल पकड़ेगा। बच्चे ग्रहों से इतना नहीं डरते जितना कि नवयुवक डरते हैं। उनको यही बताया गया है कि जो कुछ भी होता है ग्रहों के प्रभाव से ही होता है। ग्रहों की चाल का सारे संसार पर आधिपत्य है। ग्रहों की दासता की बन्धन कड़ियों को सुदृढ़ करने के लिए कई प्रकार के तर्क सोचे गये हैं।

गणित ज्योतिष और फलित ज्योतिष :- ऋषि दयानन्द ने गणित ज्योतिष व फलित ज्योतिष की तुलना करके भली प्रकार से समझा दिया है कि गणित ज्योतिष तो विज्ञान के अनुकूल है और फलित ज्योतिष विज्ञान के विरुद्ध है। फलित ज्योतिष कल्पित है। गणित ज्योतिष ग्रहों की गति पर निर्भर है। आप ग्रहों की गति को सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से देख सकते हैं और यह पता कर सकते हैं कि कल सूर्य किस समय अस्त होगा तथा किस समय उदय। गणित के कुछ नियम हैं जिनसे स्पष्ट रूप से हम ग्रहों की गति के बारे में भविष्यवाणी कर सकते हैं। यह बात ग्रहों तक ही सीमित नहीं है। जब हम मित्र को तार देते हैं कि कल अमुक गाड़ी से अमुक नगर पहुंचेंगे, आप स्टेशन पर आकर मिलिये तो प्राय: भविष्यवाणी ठीक होती है। हम सूर्य व भूमि की गति जानते हैं। इससे समय का अनुमान हो जाता है। रेल की गति का भी ज्ञान होता है। रेल विभाग के प्रबन्धकों पर भी हम को भरोसा है कि वे जहां तक हो सकेगा समय का पालन करेंगे। इस प्रकार हम गिनती मिनती करके स्टेशन पर आते हैं और अपने मित्र को मिल जाते हैं।

यात्री के विचार व रेल की गति :- इस साधारण सी घटना से कई नियमों का सम्बन्ध है। भूमि की गति, रेल की गति, रेल विभाग के कर्मचारियों की आदतें परन्तु हम यह भविष्यवाणी नहीं कर सकते कि अमुक व्यक्ति जो यात्रा कर रहा है, हमारा मित्र है अथवा शत्रु। हमको मारने आ रहा है अथवा मिलने आ रहा है क्योंकि उस यात्री के विचारों का रेल की गति से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि हम उसके विचारों को जानना चाहते हैं तो हमको और बातों का गणित लगाना पड़ेगा। हम उसके बारे में भी कुछ न कुछ भविष्यवाणी कर सकते हैं परन्तु रेल की गति को देखकर नहीं प्रत्युत दूसरी बातों के आधार पर। जो व्यक्ति किसी यात्री के भाग्य का निर्णय रेलवे की समय सारणी को देखकर करना चाहता है उसको तो हम पागल ही कहेंगे। इसी प्रकार यह सम्भव है कि हम किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य विषयक कुछ भविष्यवाणी कर सकें अथवा यह भी बता सकें कि जिस स्त्री से वह विवाह रचा रहा है वह उसके सुख का साधन बनेगी अथवा दु:ख का परन्तु इस बात को जानने के लिए व्यक्ति का पिछला स्वास्थ्य अथवा स्त्री की पुरानी आदतों अथवा स्त्री के कुल के विचारों का अनुमान लगाना होगा। इस बात के लिए सूर्य, चन्द्र, बुध, मंगल आदि की ओर देखना बड़ी भयानक भूल होगी। इसी के लिए एक उर्दू कवि ने लिखा है :-

अंजम शनास को भी खलल है दिमाग का।
पूछो अगर जमीं की कहे आसमां की बात।।

अर्थात् ज्योतिषी जी के मस्तिष्क में भी कुछ गड़बड़ अवश्य है। आप धरा की बात पूछते हैं तो वह आकाश की बताने लगता है। बहुत से लोग यह कहा करते हैं कि जब सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण की भविष्यवाणी की जाती है तो ज्योतिष के ग्रन्थों से इसी प्रकार से मानवीय भाग्य की भविष्यवाणी क्यों नहीं की जा सकती?इस धोखे में जनसाधारण आ जाते हैं परन्तु यह बात तो उसी प्रकार की है जैसे मोहन की नाड़ी देखकर गोपाल के ज्वर के बारे में भविष्यवाणी की जाये। सूर्यग्रहण कोई पृथक बात नहीं। सूर्य और भूमि की गति की एक विशेष अवस्था का नाम सूर्यग्रहण है। इसलिए भूमि व चन्द्र की गतियों की गणना से देखा जा सकता है कि सूर्यग्रहण कब लगेगा। उसी प्रकार से जैसे आप रेल की चाल से पता लगा सकते हैं कि अमुक गाड़ी देहली कब पहुंचेगी परन्तु मनुष्य के जीवन की परिस्थितियां तो बहुत ही भिन्न हैं। ज्योतिषी यह तो जान सकता है कि चन्द्रोदय कब होगा क्योंकि चन्द्र की गति का उसे पता है परन्तु ज्योतिषी यह कैसे जान सकता है कि सीता के पेट से पुत्र जन्मेगा अथवा पुत्री?सोहन बी. ए. परीक्षा में सफल होगा अथवा विफल?

– गंगा ज्ञान सागर पुस्तक से साभार

बलिवैश्वदेव यज्ञ कब और कहाँ

– डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार

पोषण विज्ञानी प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रतिदिन चार बार आहार लेने की सिफारिश करते हैं – प्रातराश (ब्रेकफास्ट) दोपहर का भोजन (लंच), सायंकालीन अल्पाहार (स्नैक्स) तथा रात्रि भोजन (डिनर)। ये चारों आहार अलग–अलग नियत समय पर लेने का प्रावधान है। प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि ये चारों आहार एक ही समय में एक साथ लेने की बाध्यता कर दी जाये तो क्या ऐसा सम्भव है? उत्तर निश्चित रूप से 'नकार' में ही होगा।

इसी तारतम्य में एक अन्य प्रश्न आप स्वयं को महर्षि दयानन्द का सच्चा भक्त कहते हो, यह भक्ति क्या वैसी ही है, जैसी पौराणिक 'राम', 'कृष्ण' आदि देवी–देवताओं के प्रति करते हैं यानि जो जितना अधिक उनका नाम जपे, जितनी अधिक बार उनकी प्रतिमा का पूजन करे, धर्मग्रन्थ माने जाने वाले 'रामायण', 'श्रीमद्भागवत' आदि ग्रन्थों की जितनी अधिक बार आवृत्ति करे, वह उतना ही महान् व सच्चा प्रभु भक्त है। अभिप्राय यह है कि स्वयं को आर्य समाजी विचारधारा का पोषक मानने वाले क्या केवल ऋषि दयानन्द का नाम जपने, उनके चित्र की पूजा अर्चना करने, उसे विद्युत लड़ियों से सुसज्जित करने में ही स्वयं को कट्टर ऋषि भक्त मानते हैं या महर्षि के सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों का अनुपालन करने में। यदि आप स्वयं को वास्तविक अर्थों में ऋषि भक्त मानते हैं तो उनके मन्तव्यों/सिद्धान्तों का अनुपालन करने में कोताही क्यों? ये प्रश्न ऐसे थे कि जिन्हें सुनकर श्रोताओं में एकदम शान्ति मौन (पिन ड्रॉप साइलेन्स) सबको विस्मय भरी दृष्टि से निहारना।

श्रोताओं के विस्मय को देखते हुए वक्ता ने अपने वक्तृत्व के क्रम को जारी रखते हुए स्पष्ट किया कि उन्होंने उक्त प्रश्न पंचमहायज्ञ, विशेषकर बलिवैश्वदेव यज्ञ के संदर्भ में किये हैं।

मनु महाराज ने मनुस्मृति में पांच महायज्ञों का विधान किया है –

पंच क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम्। – मनु. 3/61

इसके आधार पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी स्वरचित ग्रन्थों – सत्यार्थ प्रकाश, पंचमहायज्ञविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में पंचमहायज्ञों को करने का आदेश दिया है। ये पांच यज्ञ हैं – ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ। मनु ने इन यज्ञों को कुछ यों व्याख्यात किया है –

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।। – मनु. 3/70

अर्थात् पढ़ना–पढ़ाना, सन्ध्योपासन करना 'ब्रह्मयज्ञ' कहलाता है, माता–पिता आदि की सेवा–सुश्रूषा तथा भोजन आदि से तृप्ति करना 'पितृयज्ञ', प्रातः–सायं हवन करना 'देवयज्ञ', कीटों–पक्षियों–कुत्तों एवं कुष्ठ रोगियों आदि के लिए भोजन का भाग बचाकर देना 'भूतयज्ञ' या 'बलिवैश्वदेवयज्ञ' तथा अतिथि सत्कार 'नृयज्ञ' या 'अतिथियज्ञ' कहलाता है। इन यज्ञों को 'अहुत', 'हुत', 'प्रहुत', 'ब्राह्महुत' और 'प्राशित' नाम भी दिया गया है –

अहुतं च हुतं चैव तथा प्रहुतमेव च।
ब्राह्म हुतं प्राशितं च पंचयज्ञान्प्रचक्षते।। – मनु. 3/73

यहाँ मनु को अहुत से ब्रह्मयज्ञ, हुत से होम अर्थात् देवयज्ञ, प्रहुत से भूतयज्ञ या बलिवैश्वदेवयज्ञ, ब्राह्महुत से अतिथि यज्ञ तथा प्राशित से पितृयज्ञ अभिप्रेत है –

जपोऽहुतो हुतो होमः प्रहुतो भौतिको बलिः।
ब्राह्महुतं द्विजाश्यार्चा प्राशितं पितृतर्पणम्।। – मनु. 3/74

प्रत्येक वह व्यक्ति जो घर में निवास करते हुए भी (सूनादोषैः) चूल्हे आदि में हुए हिंसा के दोषों से बचे रहना चाहता है उसे इन पाँच यज्ञों को अवश्य करना चाहिए, ऐसा मनु ने विधान किया है (मनु. 3/71)। जो व्यक्ति इन पांच यज्ञों को नहीं करता है वह वास्तव में नहीं जीता है, अर्थात् मृत के समान है – **'न निर्वपति पंचानामुच्छ्वसन्न स जीवति'** (मनु. 3/72)। यदि किसी कारणवश कोई पांचों यज्ञ न कर सके तो उसके लिए मनुस्मृतिकार ने एक विकल्प सुझा दिया है कि वह प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ तो अवश्य ही करें, ताकि वह समस्त चेतन एवं जड़–चेतन का पालन–पोषण करने में सक्षम बन सके –

स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्याद्दैवे चैवेह कर्मणि।
देवकर्मणि युक्तो हि बिभर्तीदं चराचरम्।। – मनु. 3/75

इन यज्ञों को करने का समय व स्थान भी निर्धारित है। ब्रह्मयज्ञ रात्रि और दिन के दोनों सन्धि कालों में करने का विधान है – **"रात्रिन्दिवयोः सन्धिवेला यामुभयोस्सन्ध्ययाः सर्वैर्मनुष्यैरवश्यं परमेश्वरस्यैव स्तुतिप्रार्थनोपासनाः कार्याः"** (पंचमहायज्ञविधि, महर्षि दयानन्द सरस्वती)। ब्रह्मयज्ञ एवं देवयज्ञ (अग्निहोत्र) को प्रातः सायं करने के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पंचमहायज्ञविधि में अथर्ववेद के निम्न मंत्रों को भी उद्धृत किया है –

सायंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातः प्रातः सौमनसस्य दाता।
वसोर्वसोर्वसुदान एधि वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम।।
प्रातः प्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः सायंसायं सौमनस्य दाता।
वसोर्वसोर्वसुदान एधीन्धानास्त्वा शतंहिमा ऋधेम्।।

– अथर्व. 19/55/3–4

इस काल निर्धारण की पुष्टि षड्विंशब्राह्मण और तैत्तिरीय आरण्यक के निम्न उद्धरणों से भी हो जाती है –

तस्माद् ब्राह्मणोऽहोरात्रस्य संयोगे सन्ध्यामुपास्ते। स ज्योतिष्या ज्योतिषो दर्शनात् सोऽस्याः कालः, सा सन्ध्या। तत् सन्ध्यायाः सन्ध्यात्वम्।।

– तैत्तिरीय आ. 2/2/2

मनु ने भी सन्ध्योपासन का यही समय निर्धारित किया है –

पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शनात्।
पश्चिमां तु समासीनः सम्यगृक्षविभावनात्।।

– मनु. 2/101

अर्थात् दो घड़ी रात्रि से लेकर सूर्योदय पर्यन्त प्रातः सन्ध्या और सूर्यास्त से लेकर तारों के दर्शन पर्यन्त सायंकाल में सविता की उपासना गायत्र्यादि मन्त्र के अर्थ विचार पूर्वक नित्य करें। मनु ने यहां तक कह दिया है कि जो ऐसा नहीं करता है उसे द्विजकुल से अलग करके शूद्रकुल में रख देना चाहिए –

न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्।
स शूद्रवत् बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः।। – मनु. 2/103

पंचमहायज्ञ की श्रृंखला में तीसरा यज्ञ है **पितृयज्ञ।** जीवित माता–पिता आदि वृद्धजनों का सत्कार ही पितृयज्ञ है। यह यज्ञ किसी काल व स्थान का मोहताज नहीं है।

इसके बाद भूतयज्ञ या बलिवैश्वदेव यज्ञ आता है। बलिवैश्वदेव यज्ञ में निम्नलिखित तीन कर्म किये जाते हैं –

(क) जब भोजन सिद्ध हो चुके तब जो कुछ भोजनार्थ बना हो, उसमें से खट्टा, लवणान्न और क्षार को छोड़कर घृत मिष्ठयुक्त अन्न लेकर **'ओम् अग्नये स्वाहा'** आदि दश मन्त्रों से प्रज्ज्वलित अग्नि में आहुति दी जाती है।

(ख) भूमि पर थाली या पत्ता रखकर उस पर 'ओं सानुगायेन्द्राय नमः', 'ओं सानुगाय यमाय नमः' आदि सोलह मन्त्रों द्वारा प्रत्येक से पूर्व दिशा आदि क्रम से घृत–मिष्ठयुक्त अन्न के भाग रखे जाते हैं। ये भाग किसी अतिथि को दे दिये जाते हैं या अग्नि में छोड़ दिये जाते हैं।

(ग) इसके बाद लवणान्न अर्थात् दाल, भात, शाक, रोटी आदि के छह भाग भूमि पर रखे जाते हैं, जो कुत्ते, पतित, चाण्डाल, पापरोगी, कौए और कृमि अर्थात् चींटी के निमित्त होते हैं –

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।
वायसानां कृमीणा च शतकैर्निर्वपेद् भुवि।। – मनु. 3/92

अब प्रश्न उपस्थित होता है कि बलिवैश्वदेव यज्ञ के अन्तर्गत विहित तीनों कर्म किस स्थान पर किये जाने चाहिए। शास्त्र सम्मत उत्तर है कि ये तीनों कर्म भोजनागार (रसोईघर) में करने का विधान है।

इस संदर्भ में मनुस्मृति का होमविधायक निम्न प्रमाण द्रष्टव्य है, जिसे महर्षि दयानन्द ने भी उद्धृत किया है –

वैश्वदेवस्य सिद्धस्य गृह्येऽग्नौ विधिपूर्वकम्।
आभ्यः कुर्याद् देवताभ्यो ब्राह्मणो होममन्वहम्।। – मनु. 3/84

यहाँ 'गृह्येऽग्नौ' शब्द से स्पष्ट है कि बलिवैश्वदेव होम गृह्य अग्नि में करना है। स्वामी जी के शब्दों में, "चूल्हे से अग्नि अलग धर, उसकी पाकाग्नि में विधिपूर्वक होम नित्य करें।"

मनु एवं महर्षि दयानन्द के उक्त विचारों की पुष्टि महर्षि अंगिरा एवं महर्षि कात्यायन के इन वचनों से भी होती है –

यस्मिन्नेव पचेदन्नं तस्मिन् होमो विधीयते। – म. अंगिरा

यस्मिन्नग्नौ भवेत् पाको वैश्वदेवस्तु तत्र। – छन्दोगपरिशिष्ट

बलिवैश्वदेवयज्ञ के उक्त प्रावधान का प्रयोजन बताते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में लिखा है –

"हवन (बलिवैश्वदेव यज्ञ का होम) करने का प्रयोजन यह है कि पाकशालास्थ वायु का शुद्ध होना और जो (चूल्हा जलाने से) अज्ञात अदृष्ट जीवों की हत्या होती है उसका प्रत्युपकार कर देना।"

सम्भवतः पहली–दूसरी पीढ़ी की माताएँ इसी भावना के वशीभूत हो अपने घरों में बने भोजन का कुछ अंश सर्वप्रथम उस चूल्हे या अंगीठी में डालती थीं, जिसमें भोजन बनाया जाता था। कुछ परिवारों में आज भी यह परम्परा अक्षुण्ण है।

आज के परिप्रेक्ष्य में मन में यह विचार उत्पन्न हो सकता है कि जब भोजन आदि गैस पर बनाया जाने लगा है, चूल्हे–अंगीठी का नामोनिशान ही नहीं रहा तो यह होम कहाँ और कैसे किया जाये। हमारे प्राचीन ऋषि–मुनि दूरदृष्टि वाले थे और उन्हें सम्भवतः इस समस्या का पूर्वाभास था, इस कथन की पुष्टि, 'गृह्यज्ञकल्पावलि' के इस श्लोक से होती है –

न चुल्यायां नायसे पातेर न भूमौ न च खर्परे।
वैश्वदेवं प्रकुर्वीत कुण्डे वा स्थिण्डिलेऽपि वा।।

अर्थात् वैश्वदेव होम कुण्ड में या स्थण्डिल में करना चाहिए, न कि चूल्हे, लोहे के पात्र या भूमि पर या खप्पर में। फिर यह कुण्ड किस धातु का बना होना चाहिए, इसका उत्तर देते हुए 'माध्यन्दिनवाजसनेयह्निकार' ने स्पष्ट किया है – **"अपि ताम्रमयं प्रोक्तं कुण्डं मनीषिभिः"** अर्थात् विद्वानों के मतानुसार यह कुण्ड ताम्बे का होना चाहिए।

इस पर कुछ याज्ञिक शंका करते हैं कि इस कुण्ड में 'गृह्य अग्नि' कैसे उत्पन्न की जायेगी। इसका समाधान भी उपलब्ध है, वह यह कि गैस/बिजली के चूल्हों से लकड़ी, रुई, धूपबत्ती, अगरबत्ती, कपूर आदि जलाकर इस कुण्ड में अग्नि उत्पन्न की जा सकती है। सौर चूल्हे पर भोजन बनता हो तो सूर्य किरणों से भी अग्नि पैदा करने का साधन उपलब्ध है। अन्य कुछ सम्भव न हो तो दियासलाई जलाकर पाकशाला में उत्पन्न की गई अग्नि भी गृह्य अग्नि कहलायेगी एवं पाकशाला में ही और ग्रह्य अग्नि में ही बलिवैश्वदेव यज्ञ का होम करना शास्त्रानुकूल है और जिस प्रयोजन से यह होम किया जाता है, वह पूर्वोक्त प्रयोजन भी पाकशाला में ही तथा गृह्य अग्नि में ही होम करने से सिद्ध हो सकता है।

इस विधान के होते हुए भी आजकल अधिकांश विद्वान्/विदुषी ब्रह्म/पुरोहित देवयज्ञ या पारायण यज्ञ के अन्त में ही यजमान से बलिवैश्वदेव यज्ञ के होम की आहुतियाँ भी डलवा देते हैं और तर्कसंगत ढंग से शास्त्र विहित विधान से अवगत कराने पर भी हठ–धर्मिता का परिचय देते हुए 'परम्परा' की अथवा आश्रमों/संस्थाओं में अधिकारियों के आदेशों की दुहाई देकर अनवरत रूप से ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ एक ही साथ करवाना अपना अधिकार मानते हैं। यह परम्परा सर्वथा अशास्त्रीय है और इससे बलिवैश्वदेव यज्ञ के होम का प्रयोजन भी सिद्ध नहीं होता है। अतः शास्त्र विरुद्ध कृत्य के दोष से बचने के लिए ऋषि–मुनियों एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती को अभिमत विधि–विधान का ही कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए।

– 217, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर–249407 (हरिद्वार)

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

पृष्ठ–1 का शेष

2 से 7 अक्टूबर, 2018 तक नशाबन्दी जन–चेतना यात्रा निकाली जायेगी

स्वागत के उपरान्त नीतिश व भारती भाई बहनों ने मधुर स्वर व तबला वादन से सबका मन मोह लिया। ऋचा वैद, प्रगन्य छोटे बच्चों ने वाद्य यन्त्र के कार्यक्रम से सबको आनन्दित किया। फिरोजपुर से पधारे श्री विजय आनन्द जी ने अपने भजनों से उपस्थित जनसमूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

अपने अध्यक्षीय भाषण द्वारा सभा को सम्बोधित करते हुए श्री ओम प्रकाश आर्य ने कहा कि 'आर्य गौरव दिवस' उन महापुरुषों की स्मृति में आयोजित किया जाता है जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर देश को स्वतंत्र कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आजादी की प्रथम लड़ाई में बलिदान हुए मंगल पाण्डे से लेकर शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिल्मिल आदि तथा पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, श्री राजपाल, स्वामी स्वतंत्रानन्द, लाला लाजपत राय आदि सभी में स्वामी दयानन्द जी के विचारों की आग प्रज्ज्वलित थी जिसके कारण हम सभी आज खुले आसमान में सांसे ले रहे हैं। ऋषि–मुनियों के द्वारा आर्यावर्त भारत देश को सोने की चिड़िया की उपाधि प्राप्त हुई थी। जो आदर्श, सभ्यता और संस्कृति इस देश को विरासत में प्राप्त हुई है उसे सम्भाल कर रखना हमारा परम कर्त्तव्य है। आर्य समाज के सिपाही इस संस्कृति को बचाने में हमेशा प्रयत्नरत रहेंगे। उन्होंने कहा कि समाज तथा देश से बुराईयों को नशों को दूर करने के लिए पूरे पंजाब प्रदेश में 2 अक्टूबर महात्मा गाँधी व लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती से लेकर 7 अक्टूबर, 2018 तक जनजागृति यात्रा का प्रारम्भ किया जायेगा जिसका उद्देश्य नशाविहीन समाज का निर्माण करना होगा और इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम में हम सभी अपनी भूमिका का निर्वहन करेंगे। मुख्य अतिथि श्री कुंवर विजय प्रताप सिंह, आई.जी. पंजाब ने कहा कि आर्य समाज ही है जो हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता और मानवता की रक्षा कर सकता है। माता–पिता, गुरुओं की मर्यादा की रक्षा की रखवाली करने का काम आर्य समाज कर रहा है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी आर्यवेश जी ने

कहा कि सांस्कृतिक विरासत को महापुरुषों ने आज तक संभाल कर रखा हुआ है। अब हमारी बारी है कि इसे कितना संजोकर रख सकते हैं। आर्य समाज ही है जो आम जनता का हितैषी है। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के छठे नियम में कहा गया है कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इससे स्पष्ट हो जाता है कि आर्य समाज किसी आर्य समाजी, किसी हिन्दू या किसी भारतीय का उपकार करने मात्र के लिए नहीं बनाया था बल्कि प्राणी मात्र के उपकार करने के लिए बनाया गया था। पूरे संसार का उपकार करने का दायित्व आर्य समाज को सौंपा था। इसी नियम में संसार के उपकार शब्द की व्याख्या करते हुए लिख दिया था कि शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। स्वामी जी ने कहा कि शरीर की उन्नति के बिना उसके रख–रखाव के बिना उसकी अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा किये बिना मनुष्य का जीवन खतरे में पड़ सकता है। दूसरा कार्यक्रम आत्मिक उन्नति और उसके बाद सामाजिक उन्नति करना बताया। इन तीनों उन्नतियों के बगैर संसार का उपकार सम्भव नहीं है। स्वामी जी ने कहा कि एक महान संन्यासी ने न केवल इस देश की सड़ी–गली समाज व्यवस्था के विरुद्ध बगावत की आंधी खड़ी कर दी थी बल्कि सारी दुनिया के विचारशील लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया था। आज उन्हीं विचारों को आगे रखकर आर्य गौरव दिवस के रूप में यह आर्य सम्मेलन के माध्यम से जन–जागृति का यह प्रयास अति सराहनीय है। इस कार्यक्रम के सभी आयोजकों को साधुवाद देते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने पुनः इस कार्यक्रम की विषयवस्तु पर संगोष्ठी व विचारशील लोगों को एकत्रित कर अपनी सभ्यता, संस्कृति, धरोहर, माता–पिता के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठा को घर–घर तक पहुँचाने के लिए संस्कारशाला के माध्यम से जन–जागृति अभियान चलाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट ने कहा कि आर्य समाज हमेशा से लोगों के दुःख–दर्द में भागीदार रहा है। किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा सामाजिक, बुराईयों से त्रस्त समाज अथवा राजनैतिक अव्यवस्था के विरुद्ध आर्य समाज ने हमेशा बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज के लोग आर्य समाज के साथ जुड़ें और अपनी समस्याओं का निराकरण करने के लिए आर्य समाज को सहयोग प्रदान करें।

इस पूरे कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. नवीन आर्य व आचार्य दयानन्द शास्त्री ने सम्मिलित रूप से किया। पूरे कार्यक्रम को सफल बनाने में आचार्य दयानन्द शास्त्री, श्री नरेन्द्र आर्य, श्री राजकुमार, श्री अशोक वर्मा, श्री कर्ण पसाहन, श्री सुनील पसाहन, श्री नरेश पसाहन आदि ने अनथक प्रयत्न किया। इस अवसर पर श्री विनोद मदान आर्य समाज नवाकोट, श्री हीरालाल दुग्गल, श्री आशीष मेहरा, श्री अनिल कपूर, श्री सतीश, श्री विनोद, श्री पंकज, श्री सुबाहु, श्री कुणाल, श्री गौरव आर्य, श्री ऋषि आर्य, श्री विजय अरोड़ा, श्रीमती मीना कपूर, श्रीमती कुन्ती माता, श्री सरदारी लाल, श्री बांके बिहारी, श्री चमनलाल, आर्य समाज हरिपुरा, श्री रामचन्द्र, श्री नवनीत, श्री भोला आदि ने उपस्थित होकर 'आर्य गौरव दिवस' कार्यक्रम की शोभा में चार–चांद लगा दिये।

वीतराग संन्यासी कर्मयोगी स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) के जन्मोत्सव समारोह की तैयारी हेतु कार्यकर्ता बैठक सम्पन्न

4 से 6 मई, 2018 को चम्बा में होगा विशाल आर्य महासम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा संचालन समिति के अध्यक्ष, वैदिक विरक्त मण्डल के प्रधान एवं दयानन्द मठ चम्बा हिमाचल प्रदेश के संस्थापक व संचालक वीतराग संन्यासी स्वनामधन्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती के 79वें जन्मदिवस पर प्रायोजित 4 से 6 मई, 2018 के विशाल आर्य महासम्मेलन एवं जन्मोत्सव समारोह की तैयारियों के लिए प्रमुख कार्यकर्ताओं की एक महत्त्वपूर्ण बैठक 6 अप्रैल, 2018 को दयानन्द मठ चम्बा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक का संयोजन दयानन्द मठ प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष आचार्य महावीर सिंह जी ने किया। बैठक में सर्वश्री सुरेन्द्र भारद्वाज पूर्व विधायक चम्बा, प्रिं. कुन्दन लाल गुप्ता (सेवानिवृत्त), प्रिं. अशोक गुलेरिया डी.ए.वी. स्कूल चम्बा, प्रिं. बृजबाला गुप्ता, दयानन्द सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल दयानन्द मठ चम्बा, उपप्रधानाचार्या श्रीमती करूणा दयानन्द सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल दयानन्द मठ चम्बा, डॉ. केशव वर्मा, श्री सुमन मिन्हास, श्री योगराज, आर्य समाज चम्बा के मंत्री श्री विक्रमादित्य महाजन, समाज के प्रधान श्री सुखलाल शास्त्री, श्री देशराज राणा, श्री तीरथ सिंह, श्री अमर सिंह, श्री जसवन्त ठाकुर, श्री हेम त्रिपाठी तथा श्री चतर सिंह सूर्यवंशी अध्यक्ष हिमाचल शिक्षक संघ एवं स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल आदि के अतिरिक्त अन्य गणमान्य कार्यकर्ताओं ने बैठक में भाग लिया। मठ के अध्यक्ष आचार्य महावीर जी ने प्रायोजित जन्मोत्सव समारोह एवं आर्य महासम्मेलन की पृष्ठभूमि एवं तैयारियों का विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि गत् सितम्बर मास में शारद यज्ञ के अवसर पर सैकड़ों आर्यजनों की उपस्थिति में तथा स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में यह निर्णय लिया गया था कि आर्य जगत् की महान विभूति कर्मयोगी, स्वनाम धन्य पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के 79वें जन्मदिवस के अवसर पर विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन दयानन्द मठ चम्बा के ऐतिहासिक प्रांगण में किया जाये। लिये गये निर्णय के अनुरूप हमने सर्वप्रथम आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के पदाधिकारियों के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि, क्योंकि पूज्य स्वामी जी महाराज वर्षों तक हिमाचल सभा के प्रधान पद पर सुशोभित होकर कार्य करते रहे हैं अतः इस आर्य महासम्मेलन में सभा अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाये और इसको सफल बनाने में सर्व प्रकार से सहयोग करे। आचार्य जी ने बैठक में सूचित किया कि सभा के पदाधिकारियों ने हमारे उक्त प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर सम्मेलन को एक अविस्मरणीय कार्यक्रम के रूप में सफल बनाने का आश्वासन देते हुए कहा कि सभा इसमें पूरा सहयोग करेगी।

आचार्य जी ने यह भी बताया कि स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल के सभी सदस्यों ने अपना तन, मन, धन से सहयोग देने का आश्वासन देकर सम्मेलन की सफलता को और मजबूती प्रदान की है। विदित हो कि स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल में दयानन्द मठ चम्बा के वे सभी स्नातक सदस्य हैं जिन्हें पूज्य स्वामी जी महाराज ने मठ में संचालित संस्कृत महाविद्यालय में निःशुल्क शिक्षा लेकर न केवल योग्य विद्वान बनाया बल्कि जीविकोपार्जन की दृष्टि से भी उन्हें सक्षम बना दिया और सभी स्नातक राजकीय विद्यालयों में अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं या हिमाचल, पंजाब व दिल्ली की प्रतिष्ठित आर्य समाजों में पौरोहित्य कार्य के माध्यम से आर्य समाज की सेवा कर रहे हैं। आचार्य महावीर जी ने उपस्थित कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि वे अब सम्मेलन की तैयारी में युद्ध स्तर पर जुट जायें और इसके लिए टोलियाँ बनाकर गाँव–गाँव तथा नगरों में दौरे करें। बैठक में सम्मेलन की सफलता के लिए अनेक समितियों का गठन करने तथा कार्य विभाजन सम्बन्धी सुझाव आये। इस अवसर पर शोभा यात्रा समिति, यज्ञ समिति, आवास समिति, भोजन समिति, मंच एवं पण्डाल समिति, धन–संग्रह समिति तथा स्वागत समिति गठित करने का निर्णय किया गया। उक्त समितियों के संयोजक निम्न प्रकार से नियुक्त किये गये – शोभा यात्रा समिति के संयोजक श्री चतर सिंह सूर्यवंशी, यज्ञ समिति की संयोजक प्रिं. बृजबाला, आवास समिति के संयोजक श्री अमर सिंह, भोजन समिति के संयोजक श्री विक्रमादित्य महाजन, मंच एवं पण्डाल समिति के संयोजक श्री योगराज, धन–संग्रह समिति के संयोजक श्री केशव वर्मा, प्रचार एवं विज्ञापन समिति के संयोजक प्रिं. अशोक गुलेरिया तथा स्वागत समिति के संयोजक श्री सुरेन्द्र भारद्वाज को नियुक्त किया गया। इन सभी के संयोजन में 11 सदस्यीय समितियाँ गठित की जायेंगी जिसमें सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं को सम्मिलित किया जायेगा ताकि सबका सहयोग प्राप्त करके सम्मेलन को सफल बनाया जा सके।

सम्मेलन के कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए निश्चय किया गया कि 4 मई को प्रातः 8.30 बजे यज्ञ के द्वारा कार्यक्रम प्रारम्भ होगा। 10.30 बजे ध्वजारोहण तथा 11 बजे उद्घाटन किया जायेगा। उद्घाटन हेतु हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है तथा वे उद्घाटन सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में 4 मई को प्रातः 11 बजे मठ में पहुँचेंगे। मध्यान्ह 2 से 5 बजे तक विशाल शोभा यात्रा निकाली जायेगी जिसमें हजारों छात्र–छात्राएँ एवं आर्यजन भाग लेंगे। पूरे नगर को ओ३म् ध्वज, महर्षि दयानन्द तथा स्वामी सुमेधानन्द जी के चित्रों से सजाया जायेगा और जन–जन तक आर्य समाज का संदेश पहुँचाने का प्रयास किया जायेगा। रात्रि को 7.30 से 10 बजे तक भजन संन्ध्या का आयोजन होगा जिसमें आर्य समाज के प्रतिष्ठित भजनोपदेशक तथा कवि अपने गीतों तथा भजनों की प्रस्तुति देंगे। 5 मई, 2018 को प्रातः 8 से 9 बजे तक यज्ञ, 9 से 10 बजे तक भजन एवं प्रवचन तथा 11 से 1.30 बजे तक शिक्षा सम्मेलन का आयोजन होगा। मध्यान्ह 2 से 5 बजे तक स्वामी सुमेधानन्द स्मृति सम्मेलन आयोजित किया जायेगा जिसमें आर्यनेता, विद्वान्, संन्यासी, राजनेता एवं स्नातकगण स्वामी जी के प्रति अपने उद्गार व्यक्त करेंगे। रात्रि को 7.30 से 10 बजे तक राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन होगा। 6 मई को प्रातः 8 से 10 बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति एवं 10.30 से 1.30 बजे तक आर्य सम्मेलन होगा जिसमें विभिन्न विद्वान् एवं नेतागण अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। सम्मेलन के उपरान्त ऋषि लंगर की व्यवस्था होगी तथा कार्यक्रम का समापन हो जायेगा। तीन दिन के इस विभिन्न सम्मेलनों के कार्यक्रम का विधिवत लिखित प्रारूप तैयार करने के लिए आचार्य महावीर जी को अधिकृत किया गया। वे प्रान्तीय सभा के पदाधिकारियों से तालमेल करके कार्यक्रम को अन्तिम रूप देंगे।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यकर्ताओं के उत्साह को देखकर साधुवाद दिया और कहा कि हम सबके लिए पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी प्रेरणा के पुंज थे। किसी न किसी रूप में हम सभी के जीवन में उन्होंने विशेष प्रभाव छोड़ा है जिसके कारण हमारी श्रद्धा एवं भावना इस कार्यक्रम को करने के लिए हमें प्रेरित कर रही हैं। हम सभी चाहते हैं कि पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज सदैव हिमाचल प्रदेश में ही नहीं बल्कि पूरे देश के लोगों के प्रेरणा स्रोत बने रहें। उनके यज्ञीय व्यक्तित्व से सदियों तक लोग प्रेरणा प्राप्त करते रहें और वे सदैव याद किये जायें। स्वामी जी ने कहा कि यह महासम्मेलन आर्यों के विशाल मेले के रूप में होगा जिसमें हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली तथा अन्य प्रदेशों से भारी संख्या में आर्यजन पूज्य स्वामी जी महाराज को स्मरण करने के लिए आयेंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने अगले एक माह तक सम्मेलन की तैयारी में प्राणपण से जुटने की कार्यकर्ताओं को प्रेरणा दी। बैठक उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुई। बैठक की पूरी रिकार्डिंग मिशन आर्यावर्त न्यूज बुलेटिन के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने की जो स्वामी जी के साथ बैठक में पधारे हुए थे। बहन सरस्वती आर्या ने सभी के भोजन की समुचित व्यवस्था करके विशेष आतिथ्य किया।

धीमा ज़हर है – कोल्डड्रिंक

अधिक मात्रा में कोल्डड्रिंक पीने से मृत्यु भी हो सकती है

कोलाब्राण्ड के कोल्डड्रिंक में कैफीन डाला जाता है जो अधिक मात्रा में लेने पर बेचैनी, अनिद्रा व सिरदर्द पैदा करता है। ये बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अमरीका व यूरोप में 88ppm से कम कैफीन डालती है जबकि भारत में 111ppm तक कैफीन उपयोग करती है। जाँच करने पर कोल्डड्रिक में कई अन्य जहरीले रसायन भी पाये गये, जैसे- आर्सेनिक, कैडमियम, जिंक, सोडियम ग्लूटामेट, पोटैशियम सोरबेट, मिथाइल बेंजीन, ब्रोमिनेटेड बेजिटेबल ऑयल इत्यादि। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने कोल्डड्रिंक को 'धीमा ज़हर' घोषित किया है।

किसी भी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् अग्निदाह में देशी घी डाला जाता है जिससे पूरा शरीर जल जाता है व हड्डियाँ भी जल जाती हैं परन्तु दाँत बिल्कुल नहीं जलते। इसी तरह, यदि दाँत को मिट्टी में गाड़ दें व 20 साल के बाद निकालें तो भी दाँत बिल्कुल नहीं गलते हैं।

जिस दाँत को घी की आग नहीं जला सकती, मिट्टी नहीं गला सकती है यदि उस दाँत को किसी भी कोल्डड्रिंक में डाला जाये तो ज्यादा से ज्यादा 20 दिन में वह दाँत पूरा घुल जाता है तथा छानने पर भी दिखाई नहीं देता।

कारण-कोल्डड्रिंक में फास्फोरिक एसिड (तेजाब) नामक जहर होता है, जो मनुष्य के शरीर के सबसे कठोर अंग यानि दाँत को ही नहीं बल्कि दुनियाँ की अधिकतर वस्तुओं, यहाँ तक कि लोहे को भी पूरी तरह से खा जाता है। अब आप सोचिए कि कोल्डड्रिंक पीने पर यह शरीर के कई नाजुक अंगों के सम्पर्क में आता है तो उनका क्या हाल होता होगा। चूँकि कोल्डड्रिंक में बहुत पानी होता है इसलिए इसका असर धीमे-धीमे होता है व तत्काल दिखाई नहीं देता है।

अहमदाबाद स्थित कंज्यूमर एजूकेशन एण्ड रिसर्च सेंटर द्वारा जाँच करने पर कोल्डड्रिंक में कार्बोलिक एसिड एरिथारबिक एसिड व बेंजोइक एसिड नामक तेजाब भी पाये गये हैं। रसायन विज्ञान का कोई भी विद्यार्थी जानता है कि किसी भी एसिड की तीव्रता PH पेपर से पता की जा सकती है PH7 जितनी कम होगी, एसिड उतना तीव्र होगा। कोल्डड्रिंक की PH तीव्रता लगभग 2.4 होती है। इसी कारण कोल्डड्रिंक पीने पर गले व पेट में जलन, डकारें, दिमाग में सनसनी, चिड़चिड़ापन तथा एसिडिटी हो जाती है। ध्यान रहे कि कई फलों व सब्जियों जैसे नारंगी, नींबू, कैरी में भी एसिड होते हैं लेकिन प्राकृतिक रूप में होने से शरीर में जाकर वे क्षार में बदल जाते हैं तथा शरीर की एसिडिटी कम करने का कार्य करते हैं जबकि कोल्डड्रिंक में एसिड कृत्रिम रूप में होने के कारण खतरनाक होते हैं।

घर में संडास साफ करने में इस्तेमाल होने वाले हाइड्रोक्लोरिक एसिड की PH तीव्रता कोल्डड्रिंक के बराबर है। क्या ऐसे कोल्डड्रिंक को पीना चाहिए या .....?जरा सोचिए!!!

शरीर विज्ञान के अनुसार हर प्राणी सांस के माध्यम से हवा में विद्यमान ऑक्सीजन (प्राण वायु) लेता है तथा शरीर में उत्पन्न कार्बन डाई ऑक्साईड (Co_2) नामक जहरीली गैस बाहर निकाल देता है। हर कोल्डड्रिंक में Co_2 डाली जाती है जिससे यह लम्बे समय तक खराब न हो। कोल्डड्रिंक पीने पर शरीर इसे नाक व मुँह के माध्यम से वापस बाहर निकाल देता है। यदि कभी गलती से बाहर न निकल पाये तो मृत्यु निश्चित है।

हाल ही में सरकार नें कानून बनाया है कि गाड़ियों में सिर्फ सीसा रहित (अनलीडेड) पेट्रोल ही उपयोग किया जाए क्योंकि सीसा इंजन में जलता नहीं है व धुएँ के साथ बाहर निकलकर हवा को प्रदूषित करता है। हवा में सीसे की मात्रा 0.2ppm से अधिक होने पर लोगों द्वारा इसमें सांस लेने पर यह स्नायुतंत्र, मस्तिष्क, गुर्दो, लीवर व मांसपेशियों के लिए घातक होता है।

कोकाकोला व पेप्सीकोला दोनों अमरीका की कम्पनियाँ हैं तथा वहाँ अधिक जागरूकता के कारण बेचे जाने वाले कोल्डड्रिंक में 0.2ppm से कम सीसा डाला जाता है जबकि इन्हीं बेईमान कम्पनियों द्वारा भारत में "सब चलता है" की तर्ज पर कोल्डड्रिंक में 0.4ppm सीसा डाला जाता है।

कोलाब्राण्ड के कोल्डड्रिंक में कैफीन डाला जाता है जो अधिक मात्रा में लेने पर बेचैनी, अनिद्रा व सिरदर्द पैदा करता है। ये बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अमरीका व यूरोप में 88ppm से कम कैफीन डालती है जबकि भारत में 111ppm तक कैफीन उपयोग करती है। जाँच करने पर कोल्डड्रिक में कई अन्य जहरीले रसायन भी पाये गये, जैसे- आर्सेनिक, कैडमियम, जिंक, सोडियम ग्लूटामेट, पोटैशियम सोरबेट, मिथाइल बेंजीन, ब्रोमिनेटेड बेजिटेबल ऑयल इत्यादि। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने कोल्डड्रिंक को 'धीमा ज़हर' घोषित किया है।

गौरतलब है कि एस्परटेम से बच्चों में ब्रेनहेम्रेज (मस्तिष्कघात) होकर उनकी मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए बोतल/केन पर चेतावनी लिखी है कि बच्चे इस्तेमाल न करें।

डॉक्टर्स के अनुसार कोल्डड्रिंक में पौष्टिक तत्व बिल्कुल नहीं है। यानि इसमें शरीर के लिए आवश्यक प्रोटीन, विटामिन, वसा, खनिज, कैल्शियम व फास्फोरस में से कुछ भी नहीं है। वहीं दूसरी ओर दूध औषधीय गुणधर्म वाला पौष्टिक, सुपाच्य व सम्पूर्ण आहार है तथा सिर्फ इसको पिलाने से बच्चे के शरीर का पूर्ण विकास होता है।

कीमत - कोल्डड्रिंक - 10/- रुपये 300 मिली. बोतल 33/- रुपये लीटर (फैक्ट्री लागत 70 पैसे/बोतल) .... दूध - अधिकतम 38/- रुपये प्रति लीटर।

बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हजारों वर्षो से दूध की नदियों की संस्कृति वाले हमारे देश में पिछले 10 वर्षो में आम मानसिकता इतनी विकृत हुई है कि आधुनिकता व स्टेट्स के भ्रम में लोग दूध से दोगुना से ज्यादा मंहगा तथा कई जहरीले रसायनों वाला कोल्डड्रिंक जीवन जल समझकर गटागट पी ही नहीं रहें हैं बल्कि देवता स्वरूप अतिथि को पिला भी रहे हैं।

एक 300 मिली. कोल्डड्रिंक की बोतल धोने में लगभग 10 लीटर पानी खर्च होता है। जिस देश में आजादी के इतने वर्षो के बाद भी 2 लाख गाँवों यानि 33 करोड़ जनसंख्या यानि हर तीन में से एक व्यक्ति को पीने के लिए पानी भी नसीब नहीं होता है, उस देश में कोल्डड्रिंक पीने से बड़ा कोई और पाप नहीं है। जरा सोचिए!!!

ये दोनों कम्पनियाँ सांठगांठ करके सारी कोल्डड्रिंक की एक ही कीमत रखती है। कोल्डड्रिंक में 1000 प्रतिशत से ज्यादा मुनाफा होने के कारण बिक्री बढ़ाने के लिए ये कम्पनियाँ करोड़ों रुपये खर्च करके फिल्मी सितारों व खिलाड़ियों के विज्ञापन सभी टी. वी. चैनलों, अखबारों व पत्रिकाओं में बार-बार देती है। इनसे बड़ा खेलों व फिल्मों का प्रायोजक पूरी दुनियाँ में कोई नहीं है। ये नये-नये व लुभावने व सेक्सी विज्ञापनों द्वारा लोगों के मस्तिष्क को पंगु बनाकर पश्चिमी जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है तथा मन में कामेच्छा जगाती है।

दुर्भाग्य इस देश का कि कंगाली का रोना रोने वाली सरकार ने जहाँ एक ओर गरीबों को मिलने वाले राशन के अनाज की कीमत डेढ़ गुनी कर दी है वहीं दूसरी ओर इस जहरीले पानी पर एक्साइज ड्यूटी 8 प्रतिशत घटा दी है।

अतः बहिष्कार करें - पेप्सी, लहर, 7अप, मिरिण्डा, रश, कोक, स्प्राईट, थम्सअप, लिम्का, गोल्डस्प्राइट का।

और सेवन करें - ताजे फलों का रस, मिल्क शेक, नारियल पानी, कैरी पानी, नींबू की शिकन्जी, दूध, दही, लस्सी, जलजीरा, ठंडाई, चंदन, रुहआफज़ा, रसना, डाबर फ्रूटी, पारले फ्रूटी गोदरेज जम्पिन आदि का सेवन करें।

- श्री मनोहर लाल छावड़ा के सौजन्य से
(सुमंगलम् संस्था द्वारा जनहित में प्रकाशित)

श्री मद्दयानन्द पंचकम्

– डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री

(1)
वेदानां भुवि यः प्रकाशमतुलं तेने सुविज्ञानवान्,
मूर्तीनामिह पूजनं श्रुतिपरं मेने न तर्काश्रितः।
शास्त्राणामवगाहनेन नितरां जज्ञे नरान् बौद्धिकान्,
सत्यार्थ प्रतिपादकं मुनिवरं वन्दे सदा श्रद्धया।।

(2)
नाम्ना यस्तु दया–प्रधान पदभाग् आनन्दयुक्तो महान्,
कण्ठे यस्य सरस्वती श्रुतिमती निष्णाति सा पावनी।
नाना शास्त्र विशारदो यतिवरो नृणां समुद्धारकः,
आर्याणां सुखदं समाजममितं संस्थाप्य यः शोभते।।

(3)
स्वातन्त्र्योत्कृष्टताया जनमनसि सदा भावमुद्भावयन्ती,
पाखण्डाऽज्ञानजन्यं गहनमिह तमः सर्वथा ध्वंसयन्ती।
आर्षग्रन्थेषु निष्ठा जनयति सकलं ज्ञानमित्यावहन्ती,
सर्वस्मिन् देश–काले प्रसरतु सुखदा श्रीदयानन्दवाणी।।

(4)
आर्याणां या प्रशस्ता त्रिभुवनविदिता संस्कृतिवेदमूला,
यस्यां सर्वं रहस्यं निगमतलगतं बुद्धिविज्ञानयुक्तम्।
प्राचीनानाम् ऋषीणामभिमतमतुलं ग्राह्यमस्तीति पक्षम्,
लोके सुस्थापयन्त्यो विजयमधिगताः श्रीदयानन्दवाचः।।

(5)
यज्ञानां सुप्रतिष्ठां पुनरिह भुवने कर्त्तुकामो मनस्वी,
संन्यासी वेदविद्याप्रवचननिरतः श्रीदयानन्दनामा।
नित्यं सम्पादनीया नियमविहिताः पंचयज्ञा महान्तः,
इत्येवं निर्दिशन् स सरलविधियुतं जीवनं सच्चकार।।

– साहित्य अकादमी पुरस्कारेण पुरस्कृतः
राष्ट्रपतिसम्मानितश्च
बी, 29 आनन्दनगरम्, (कारावासमार्गः)
रायबरेली (उ. प्र.)

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य के बड़े भ्राता
पंडित घनश्याम दास जी का आकस्मिक निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी महामंत्री तथा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के बड़े भाई पं. घनश्याम दास जी का दिनांक 29 मार्च, 2018 (गुरुवार) को प्रातः निधन हो गया। पंडित जी आर्य समाज महबूबनगर के वरिष्ठ पुरोहित थे। आपका क्षेत्र के लोगों में बहुत प्रभाव था। विशेष अवसरों पर होने वाले कार्यक्रमों और यज्ञों में आपके प्रवचन और उपदेश श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर देते थे। आपने आर्य समाज महबूबनगर को अपनी विद्वता, कर्मण्यता तथा मनमोहक व्यवहार से क्षेत्र में अत्यन्त प्रतिष्ठा प्राप्त कराई थी। आप हिन्दी के अनन्य भक्त थे और आपने हिन्दी प्रचार का बड़े ही उत्साह से कार्य किया। हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद की परीक्षाओं के लिए परीक्षार्थियों के लिए श्रेणियाँ चलाकर उन्हें

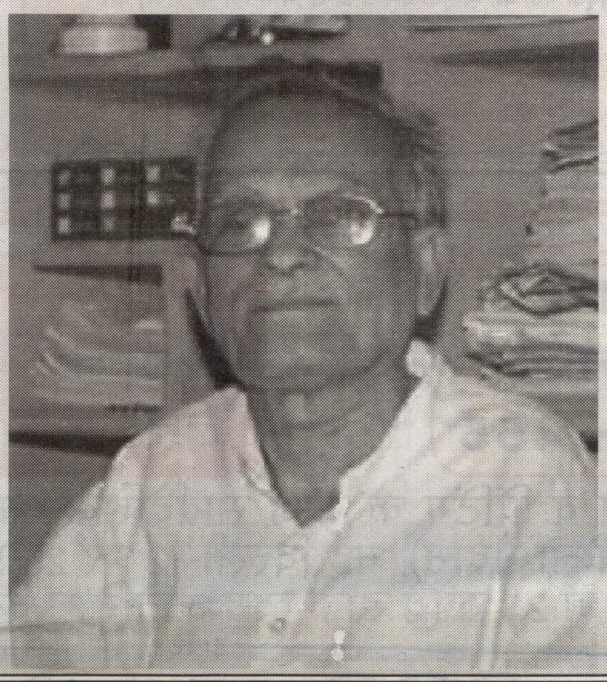

प्रशिक्षित करने का कार्य किया। पुरोहित एवं उपदेशक के रूप में भी आपने बड़ी ही तन्मयता के साथ सेवा की। ऐसे जुझारू, कर्मठ एवं विद्वान् व्यक्ति का हम सबके बीच से चला जाना बहुत ही दुःखद है और आर्य समाज की अपूरणीय क्षति है। 30 मार्च, 2018 को पंडित जी की पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न हुआ। उनकी अन्त्येष्टि संस्कार में क्षेत्र से सैकड़ों व्यक्तियों ने भाग लिया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पं. घनश्याम दास जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए उन्हें आर्य समाज महबूबनगर का एक सुदृढ़ स्तम्भ बताया। सार्वदेशिक सभा परिवार उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

आर्य जगत् के महान् वीतराग संन्यासी
पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) के जन्मदिवस के अवसर पर
दयानन्द मठ चम्बा में 5 व 6 मई, 2018 को होगा
विशाल आर्य महासम्मेलन

आप सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय है, भारी संख्या में पहुँचकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

– आचार्य महावीर सिंह, अध्यक्ष, दयानन्द मठ, चम्बा (हिमाचल प्रदेश)

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून, उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित ग्रीष्मोत्सव एवं स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून, उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित ग्रीष्मोत्सव एवं स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह 9 से 13 मई, 2018 तक आयोजित किया गया है। इस अवसर पर योग साधना निदेशक स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती तथा यज्ञ की ब्रह्मा डॉ. नन्दिता चतुर्वेदा होंगी। समापन समारोह के अवसर पर आचार्य बालकृष्ण जी पतंजलि योगपीठ हरिद्वार तथा श्री उमेश शर्मा विधायक, आचार्य आशीष जी दर्शानाचार्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। सोमवार 7 मई तथा 8 मई मंगलवार को प्रातः 8 से 12 बजे तक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया है। 10 मई, 2018 को युवा सम्मेलन प्रातः 10 से 1 बजे तक तथा 11 मई, 2018 को प्रातः 10 से 1 बजे तक महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। 13 मई, 2018 को स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह का भव्य आयोजन भी समारोह की एक विशेषता रहेगी। प्रतिदिन प्रातः 5 से 6 बजे तक योग साधना, प्रातः 6.30 से 8.30 बजे तक संन्ध्या एवं यज्ञ, सायं 3.30 से 6 बजे तक यज्ञ एवं संन्ध्या और रात्रि 7.30 से 9.30 बजे तक भजन एवं प्रवचनों का कार्यक्रम चलता रहेगा। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

– वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून,
दूरभाषः–0135–2787001
ई–मेल : vaidicsadanashram88@gmial.com

क्रान्ति के नायकों के बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि सभा

जयपुर : 23 मार्च, 2018 को मानसरोवर के विजय पथ स्थित वैदिक महिला मण्डल आर्य समाज में क्रांति के महानायकों भगत सिंह, राजगुरु तथा सुखदेव के बलिदान दिवस पर यज्ञ एवं श्रद्धांजलि अर्पित करके याद किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज समन्वय समिति, महिला आर्य समाज मानसरोवर, वैदिक सत्संग मण्डल तथा आर्य समाज जयपुर दक्षिण के सदस्य व अधिकारीगण भी उपस्थित थे। वैदिक महिला मण्डल की संयोजक डॉ. सुमित्रा आर्या ने स्वाधीनता आन्दोलन में युवा क्रांतिकारियों की भूमिका पर प्रकाश डाला तत्पश्चात् सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राजस्थान) के अध्यक्ष तथा मुख्य अतिथि यशपाल यश ने महानायकों, भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव के अदम्य साहस व शौर्य को ओजस्वी स्वर से परिभाषित किया। सैनी नर्सिंग कॉलेज के छात्रों ने भी ओजस्वी विचार प्रकट किये।

इसी कड़ी में सर्वश्री सुनील अरोड़ा, जवाहर वधवा, श्रीमती सुधा मित्तल, प्रभा सरोज के मधुर स्वरों में क्रांतिवीरों की शौर्य गाथा गूंजी।

– पं. ईश्वर दयाल माथुर

क्रांतिकारी सृजनात्मक लेखन को आगे बढ़ाएगी आर्य लेखक परिषद्

पहाड़गंज, 10 अप्रैल, 2018 नई दिल्ली। आर्य समाज व वैदिक धर्म के विचारों से ताल्लुक रखने वाले लेखकों की अंतर्राष्ट्रीय संस्था आर्य लेखक परिषद् की बैठक 8 अप्रैल, 2018 को दोपहर 1 बजे से आर्य समाज व गुरुकुल, आर्य नगर, पहाड़गंज में नई कार्य योजना, संकल्प व विचार मंथन के साथ उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हो गई।

परिषद् के मंत्री साहित्यकार व समाजसेवी पं. अखिलेश आर्येंदु ने बैठक में विचार किए जाने वाले मुद्दों के बारे में बताते हुए सभी आर्य लेखकों से अपने विचार प्रकट करने के लिए कहा। बैठक में समाज में बढ़ते अंधविश्वास, पाखंड, बुराइयों व कदाचार को लेखन के द्वारा रोकने के उपायों पर चर्चा की गई। इसके अलावा परिषद् की वेबसाइट निर्माण, पत्रिका पुनः प्रारम्भ करने, अधिवेशन का आयोजन, आर्य लेखक संगोष्ठी का आयोजन व गम्भीर लेखन करने वाले आर्य लेखकों को प्रोत्साहित करके समाज सुधार का नव वातावरण तैयार करने, आर्थिक रूप से परिषद् को समृद्ध करने, आर्य लेखकों को मैलिक लेखन के लिए प्रोत्साहित करने और नव आर्य लेखकों को गम्भीर आर्य लेखन के लिए प्रोत्साहित करने जैसे अनेक विषयों पर गम्भीर

चर्चा की गई। सभी लेखक महानुभावों का विचार था कि भारत से बाहर रह रहे आर्य बंधुओं का सहयोग भी परिषद् के लिए लिया जाए। पदाधिकारी जनों ने संकल्प लिया कि दान व कार्य में शुचिता और पारदर्शिता को हर स्तर पर पूर्व जैसे ही बनाए रखा जाएगा। इससे समाज के सभी जन प्रेरणा लेंगे। बैठक का समापन शांति पाठ के साथ हुआ।

बैठक में सर्वश्री प्रसिद्ध वैदिक विद्वान पं. शिवनारायण उपाध्याय (कोटा) आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय (दिल्ली) डा. हरी सिंह पाल (पूर्व आकाशवाणी अधिकारी) राजेन्द्र आर्य (कोटा) प. राम स्वरूप रक्षक (अजमेर) आदित्य मुनि (भोपाल) जनमेजय राणा (दिल्ली) मनोज सेहरावत (कुरुक्षेत्र) वेदभूषण आर्य (कोटा), विजय कपूर (दिल्ली) कृष्ण गोपाल आर्य (कोटा) संजीव आर्य (आर्य प्रकाशन) दिल्ली सहित तमाम आर्य लेखक व विद्वान मैजूद थे। बैठक की अध्यक्षता परिषद् अध्यक्ष आचार्य वेद प्रिय शास्त्री (बारां, राज.) ने की।

– अखिलेश आर्येंदु
प्रवक्ता व मंत्री, आर्य लेखक परिषद, दिल्ली
मो. : 8178710334 / 9868235056

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

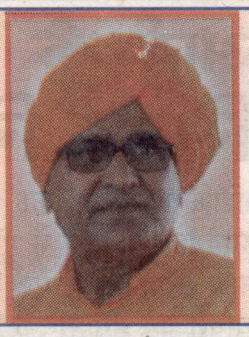

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

'श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'
लेखक–स्वामी सत्यानन्द,
मूल्य 150 रुपये, पृष्ठ–455

'मनुस्मृति'
भाष्यकार पं. तुलसीराम स्वामी,
मूल्य 200 रुपये, पृष्ठ–595

उपरोक्त दोनों पुस्तकें बढ़िया कागज व प्रिंटिंग के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–2 पर 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध हैं। डाक से मंगाने पर एक प्रति के हिसाब से 25 रुपये डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
विश्व इतिहास में पहली बार
दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को
अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का
हरिद्वार में होगा भव्य आयोजन

हरिद्वार चलो हरिद्वार चलो हरिद्वार चलो हरिद्वार चलो

सभी गुरुकुल एवं आर्यजन अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।

निवेदक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :– 011–23274771, 23260985
ई–मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

आत्म प्रज्ञा आश्रम बाघनी, तहसील–नूरपुर, जिला–कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश के
6वें वार्षिकोत्सव समारोह में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का विशेष उद्बोधन तथा कार्यकर्ता बैठक

आत्म प्रज्ञा आश्रम बाघनी, तहसील–नूरपुर, जिला–कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश का छठवां वार्षिक समारोह 6 से 8 अप्रैल, 2018 को नव–सम्वत् 2075 के अवसर पर बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पंचकुण्डीय चतुर्वेद शतकम महायज्ञ व सत्संग का आयोजन किया गया था। इस समारोह में आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान्, संन्यासी स्वामी चेतनदेव जी महाराज *(गार्गी कन्या गुरुकुल, बहिया, चावड़, अलीगढ़, उ. प्र.)*, कथावाचक एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक आचार्य संजीव रूप, गुधनी, जिला–बदायूं, उ. प्र., साध्वी विशोका यति, योग भक्ति आश्रम, बरवाला, हिसार, स्वामी रामानन्द जी करनाल, स्वामी माधवानन्द जी करनाल, स्वामी आत्मानन्द जी भदराना, कैथल, हरियाणा, स्वामी संतोषानन्द जी दयानन्द मठ घंडरा, हिमाचल प्रदेश आदि के अतिरिक्त मनमोहन स्वामी नूरपुर, वैद्य रामपाल भजनोपदेशक, डॉ. अजय कुमार लखनऊ आदि ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर श्रोताओं को ज्ञानलाभ प्रदान कराया।

इस कार्यक्रम में 6 अप्रैल, 2018 को श्री रणवीर निक्का पूर्व प्रधान ग्राम पंचायत कंडवाल, 7 अप्रैल, 2018 को श्री अजय महाजन पूर्व विधायक नूरपुर, 8 अप्रैल, 2018 को श्री राकेश पठानिया विधायक नूरपुर एवं प्रो. स्वतंत्र कुमार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने मुख्य अतिथियों के रूप में सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। 7 अप्रैल, 2018 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष आचार्य महावीर जी, शिक्षक संघ हिमाचल प्रदेश के अध्यक्ष श्री चतर सिंह सूर्यवंशी, आर्य समाज चम्बा के मंत्री श्री विक्रमादित्य महाजन तथा प्रधान श्री सुखलाल शास्त्री भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

आश्रम के संचालक स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती के प्रयत्न एवं पुरुषार्थ से पहाड़ी क्षेत्र में विकसित किये जा रहे उक्त आश्रम का हिमाचल प्रदेश में विशेष प्रभाव बनता जा रहा है। स्वामी जी अत्यन्त मिलनसार, कर्मठ, अथक परिश्रमी, त्यागी–तपस्वी एवं महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा के समर्पित संन्यासी हैं। उन्होंने इस समारोह में दूर–दूर से अपने सहयोगियों एवं श्रद्धालुओं को एकत्रित किया हुआ था। कार्यक्रम की भव्यता से मालूम पड़ता था कि लोगों की आश्रम के प्रति विशेष श्रद्धा है।

आश्रम पहुँचने पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का भव्य स्वागत किया गया और आर्य समाज नूरपुर के प्रधान श्री देशराज महाजन, मंत्री एवं हिमाचल सभा के उपप्रधान श्री विपीन महाजन के नेतृत्व में समाज के अन्य सदस्यों ने भी स्वामी जी का स्वागत किया। यज्ञोपरान्त चल रहे कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी का सार–गर्भित प्रवचन हुआ जिसे श्रोताओं ने दत्तचित्त होकर सुना। स्वामी जी ने यज्ञ की व्याख्या करते हुए बताया कि वैदिक संस्कृति यज्ञीय संस्कृति मानी जाती है। अर्थात् जैसे यज्ञ से प्राणी मात्र का कल्याण होता है उसी प्रकार वैदिक संस्कृति भी **सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः** के अनुसार सबके कल्याण की भावना से ओत–प्रोत है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि हम सभी याज्ञिक लोगों को जीवन में यज्ञ की भावना को चरितार्थ करना चाहिए और त्याग, समर्पण व प्रेम के द्वारा जन–जन के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर स्वामी चेतनदेव जी ने भी ओजस्वी व्याख्यान देकर श्रोताओं को लाभान्वित किया। यज्ञ के ब्रह्मा पद पर विराजमान आचार्य संजीव रूप की प्रभावशाली वाणी व प्रवचनशैली समस्त श्रोताओं को विशेष रूप से आकृष्ट कर रही थी।

कार्यक्रम के पश्चात् प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ स्वामी आर्यवेश जी तथा आचार्य महावीर सिंह जी ने आर्य महासम्मेलन चम्बा के लिए बैठक की। बैठक में हिमाचल सभा के उपप्रधान श्री विपीन महाजन ने सभी उपस्थित कार्यकर्ताओं का परिचय कराया और स्वामी आर्यवेश जी से मार्गदर्शन देने का आग्रह किया। स्वामी जी ने सभी कार्यकर्ताओं को प्रेरित करते हुए कहा कि वे 4 से 6 मई, 2018 को दल–बल के साथ चम्बा पहुँचे और आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान प्रदान करें। बैठक में आचार्य महावीर जी ने भी कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे अपने आपको समिधा बनाकर समर्पित भाव से कार्य करें। उन्होंने कहा कि संन्यासी अग्नि रूप होते हैं और हमलोगों को उनके द्वारा दिये जाने वाले आदेश–निर्देश को श्रद्धा के साथ स्वीकार करके कार्य करना चाहिए। आचार्य जी ने स्वामी सुमेधानन्द जी के जीवन की कुछ घटनाएँ सुनाकर उपस्थित कार्यकर्ताओं को अत्यन्त प्रभावित किया। श्री विपीन महाजन ने आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश तथा आर्य समाज नूरपुर की ओर से आश्वान देकर सम्मेलन की सफलता के लिए तन–मन–धन से सहयोग करने की घोषणा की और उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह सम्मेलन निश्चित रूप से अत्यन्त प्रभावशाली होगा। बैठक के पश्चात् सभी ने ऋषि लंगर में भोजन प्रसाद प्राप्त किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।